प्रेरणा स्रोत

श्रीमद्भगवद्गीता का भाष्य 'यथार्थ गीता'

गीता में एक परमात्मा की प्राप्ति का क्रमिक वर्णन है। जिसे प्राप्त कर मनुष्य सभी समस्याओं से सर्वथा छूट जाता है।

लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व भगवान् वेदव्यास ने भगवान् श्रीकृष्ण के उपदेश को गीता के रूप में संकलित कर सम्पूर्ण मानव-जाति को कल्याण का खुला आमन्त्रण दिया। इस संदेश को महान् दार्शनिक प्लूटो, अरस्तू, सुकरात, तबरेज, जरथुस्त्र, बुद्ध, महावीर, मछन्द्रनाथ, गोरखनाथ, भर्तृहरि, ईसा, मोहम्मद, आदिशंकराचार्य, संत ज्ञानेश्वर, कबीर, तुलसी, नानक, रैदास, मीरा, चैतन्य महाप्रभु, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि अरविन्द इत्यादि हजारों प्रभुभक्तों ने स्वीकार कर गीता का सम्मान किया है।

अपने उपदेशों एवं धर्मशास्त्रों में एक परमात्मा की चर्चा करके इन सभी महान् विभूतियों ने गीता-संदेश की पुष्टि की है। यदि इन सभी धर्मशास्त्रों से एक परमात्मा की चर्चा निकाल दी जाय तो किसी के पास कुछ भी नहीं बचता। इसलिए गीता सम्पूर्ण मानव-जाति का अतर्क्य धर्मशास्त्र है, सर्वांगीण विकास की कुंजी है।

गीता में वर्णित साधन के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति उस सम्पत्ति का मालिक बन सकता है जिसका कभी विनाश नहीं होता, जो प्रत्येक क्षेत्र में सफलता दिलाकर शाश्वत (अनन्त) जीवन प्रदान करता है।

एक परमात्मा एवं सम्पूर्ण धर्मशास्त्रों का बोध कराने वाली ''यथार्थ गीता'' आप सबके समक्ष है। जिसका तीन बार मनन करके कोई भी व्यक्ति जीवन का सच्चा मार्ग प्राप्त कर सकता है।

जिस प्रकार सम्पूर्ण नदियों का आश्रय समुद्र है, उसी प्रकार सम्पूर्ण जीवों का आश्रय परमात्मा है। उस परमात्मा को संपूर्णता से प्राप्त करने की सम्पूर्ण विधि का क्रमिक वर्णन श्रीमद्भगवद्गीता में है, जिसकी सरलतम व्याख्या आप 'यथार्थ गीता' में देख सकते हैं।

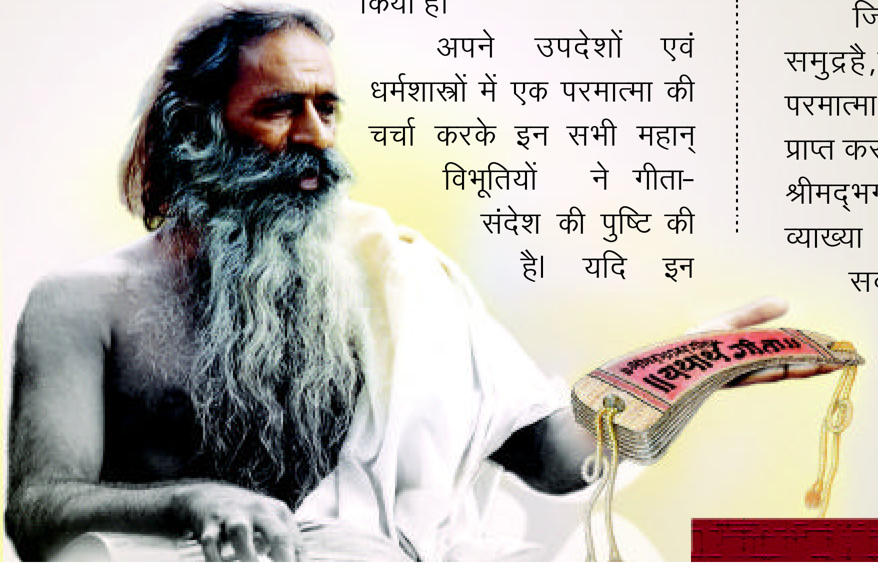

ईश्वरप्राप्ति ही जीवन का सार है।
ईश्वर ही सम्पूर्ण सुखों का आधार है।
ईश्वर ही सर्वश्रेष्ठ जीवन का स्रोत है।

जिसेअनुभवीसंतसद्गुरु के माध्यमसे अनुभवी सूत्रपात् द्वारा ध्यान-समाधि कीअवस्था में अनुभव किया जा सकता है, प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। संसार का कोई भी मनुष्य ईश्वर कोप्राप्तकरकेसर्वथादुःखमुक्त होसकताहै।पद,धनएवंबौद्धिकस्तरकेप्रभावसे कोईभीमनुष्यसुखीनहींहोसकता।

संसार में सबकुछनश्वर है, शाश्वतहैकेवलएकपरमात्मा।उस परमात्मा को जानने की कुंजीसंतहैं,जिनसेप्रेमकरकेआपअपनीआत्माकोविदितकरसकतेहैं।

संसार में जीवनयापन केजितने भी व्यवस्थितविभाग हैं। उनविभागों के सर्वोपरि पद पर आसीनव्यक्तिदुःख एवं चिन्ताओंसेमुक्त नहींहै।ईश्वर-प्राप्तिही मानव-जीवन की सम्पूर्ण समस्याओं का हल है।